प्र० = गीतिकाव्य की परिभाषा देते बताते हुए उसके स्वरूप और विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ० = गीति कवि के हृदय से निकलने वाला भाव है जिसमें संगीत और मधुरता का समावेश होता है। काव्य कला का कोमलतम स्वरूप गीतिकाव्य है। सभी गेय पदों के लिए गीतिकाव्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। गीतिकाव्य में भावातिरेक के साथ-साथ निजीपन भी उपस्थित होता है जो गीत में स्पन्दित होने वाला प्राणतत्व है। इसके अभाव में गीत निर्जीव और निष्प्राण हो जाते हैं। भाव सुखात्मक और दुःखात्मक दोनों होते हैं। इसी गीतिकाव्य की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए महादेवी वर्मा ने लिखा है — "साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुःखात्मक अनुभूति का वह शब्द है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।"

प्राच्य एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने मतानुसार गीतिकाव्य की परिभाषाएँ दी हैं। हडसन के अनुसार — "शुद्ध गीतिकाव्य में एक ही भाव, एक ही अंग भावावेश के साथ संक्षिप्त रूप में व्यंजित होता है।"

हरवर्ड रीड के अनुसार — "सूक्ष्म अनुभूतिमय रचना को गीतिकाव्य कहा जाता है।"

राइस के शब्दों में — "भाव या भावात्मक विचार के लयमय विस्फोट को गीतिकाव्य कहते हैं।"

प्रo श्यामसुन्दर दास के अनुसार - "गीतिकाव्य में कवि अपनी अन्तरात्मा में प्रवेश करता है, बाह्य जगत् को अपने अन्तःकरण में ले जाकर उसे अपने भाव में रंजित करता है। उसमें शब्द-साधन के साथ स्वर (संगीत) की साधना होती है।"

स्पष्ट है कि गीतिकाव्य निजीपन के साथ भावानुभूति का कोमल शब्दावली है जो ध्वन्यात्मकता में गेय एवं संगीतात्मक होता है।"

गीतिकाव्य के निम्नलिखित तत्व हैं —

1 भावप्रवणता —

प्रेम, करुणा, हर्ष, विषाद इत्यादि

भाव मनुष्य के हृदयतल में विद्यमान होते हैं। कवि इन्हीं भावों को वाणी प्रदान करता है। हृदय की ये भावनाएँ ही गीतिकाव्य का विषय बनती हैं। हृदय की कोमल भावनाएँ, सुख-दुःखात्मक प्रवृत्तियाँ ही गीतिकाव्य में स्वभाविक रूप से स्फुटित होती हैं। कवि के हृदय की अनुभूति जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है तभी गीतिकाव्य का सृजन होता है। करुणा को गीति का स्रोत माना गया है। क्रौंच पक्षी के करुण क्रन्दन से ही आदिकवि के मुख से कविता फूट पड़ी थी। कवि पन्त ने भी लिखा है—

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान॥

गीत केवल करुणा से ही नहीं बनती बल्कि जब भावावेश की तीव्रता चरम सीमा पर होती है तब गीत का जन्म होता होता है। इसका तात्पर्य यह है कि भावप्रवणता गीतिकाव्य का महत्त्वपूर्ण एवं प्रधान तत्त्व है।

2) आत्माभिव्यक्ति —

रस्किन के शब्दों में — "गीति काव्य कवि के निजी भावनाओं का प्रकाश होता है।" कवि के हृदय की अनुभूति ही गीत में अभिव्यक्ति पाती है इसलिए गीतिकाव्य का स्वरूप आत्माभिव्यक्तिपरक होता है। एक सफल गीतिकाव्य वह होता है जिसमें कवि की आत्माभिव्यक्ति पाठक या श्रोता की अभिव्यक्ति से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। स्वान्तः सुखाय जब उपरान्त सुखाय हो जाता है तभी वह गीति काव्य पाठक या श्रोता की अनुभूति से जुड़ पाता है। कवि के भावानुकूल आत्मनिष्ठ वैयक्तिक भावना की अभिव्यक्ति गीतिकाव्य का मुख्य तत्त्व है।

3) सौन्दर्यमयी कल्पना —

गीत एक सौन्दर्यमयी कृति है कवि की भावनाएँ यथार्थ होती हैं और जब वह अपनी अनुभूतियों को कल्पना द्वारा सजाता है तब गीतिकाव्य सुन्दर आकार लेती है। रूप-विधान बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि के प्रयोग से गीतिकार

गीतों में सौन्दर्य का सृजन करता है। कल्पना गीति काव्य के सृजन का महत्वपूर्ण तत्व है।

5) संक्षिप्तता —

गीतिकाव्य में हृदय की किसी एक अनुभूति को व्यक्त किया जाता है। यह खण्ड अनुभूति संक्षिप्त होती है अतः सघन और मार्मिक होती है। कवि की भावनाओं एवं अनुभूतियों का विस्तार सघनता और मार्मिकता को कम कर देता है। कल्पना का प्रयोग भी कम एवं कलात्मक होना चाहिए। अतः गीतिकाव्य में भावों की संक्षिप्तता आवश्यक तत्व माना गया है।

6) संगीतात्मकता एवं गेयता —

गीति का सहज स्वाभाविक रूप उसकी संगीतात्मकता एवं गेयता में है। इससे गीत की प्रभाव-शक्ति भी बढ़ती है। ~~यह~~ यह एक आवश्यक तत्व माना जाता है। गीत जब गेय होते हैं तभी वह श्रेष्ठ एवं प्रसिद्ध होते हैं।

6) कलात्मक भाषा-शैली —

गीतिकाव्य कवि के अनुभूतियों की सुन्दर कल्पना ही है और इसे वाणी प्रदान करने के लिए कोमलकांत पदावली की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि गीतिकाव्य की भाषा भी कोमल भावनाओं के अनुरूप सुन्दर, प्रवाहात्मक और कलात्मक होती है। गीतिकाव्य के इतिहास में सूर, तुलसी, विद्यापति, मीरा का नाम कलात्मक भाषा-शैली के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। छायावादी कवियों का नाम भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। छायावादी काल में भाषा की लाक्षणिक व्यंजना शक्ति, स्वाभाविक अलंकरण, नई सौन्दर्य एवं उपमान की सृष्टि सभी कलात्मक प्रसाधनों का विकास हुआ।

अन्तर्निहित संगीतात्मकता, तीव्र अनुभूति-पूर्ण आत्माभिव्यक्ति गीतिकाव्य की आत्मा है। सरल उद्रेक, नवीनता, स्वच्छता, अनाडम्बर, स्फूर्ति, कोमलता आदि गीतिकाव्य की स्वाभाविक विशेषताएँ है।

Scanned with CamScanner